केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्राः नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
L.L.BARMAN MST Govt .H.S. BHILAMPUR Dist DAMOH	मुकेश कुमार गुप्ता माध्यमिक शिक्षक शासकीय हाईस्कूल हिरदेपुर (दमोह)

② [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ 2

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 1

(i) असत्य
(ii) असत्य
(iii) असत्य
(iv) सत्य
(v) सत्य
(vi) सत्य

B S E

प्रश्नोत्तर क्रमांक 2

	(क)	(ख)
(i)	संगतकार	मंगलेश डबराल
(ii)	छंद के प्रकार	२
(iii)	बिस्मिल्ला खाँ	शहनाई वादक
(iv)	गले का हार होना	बहुत प्यारा
(v)	संधि के प्रकार	3
(vi)	बालम खीरा	लखनऊ

L.L.SARMAN
MST
Govt. H.S. BHILAMPUR
Dist DAMOH

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 3

(i) फागुन मास की आभा अब नहीं रही है।
(ii) प्रबंध काव्य के २ भेद होते हैं। [महाकाव्य एवं खण्डकाव्य]
(iii) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा बाजार के मुख्य चौराहे पर लगा दी गई थी।
(iv) 'काला अक्षर भैंस बराबर' का अर्थ है अज्ञानी होना या पढ़ लिख न सकना।
(v) बाबू जी रामनामा बही में 1000 बार राम नाम लिखते थे।
(vi) साना साना हाथ जोड़ी के आधार पर पहाड़ी कुत्ते चाँदनी रात में भौंकते थे।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 4

(i) सूरदास (ब)
(ii) फसल को (ब)
(iii) उत्साह (ब)
(iv) हर पंद्रहवें दिन (स)
(v) 3 (ब)
(vi) मणि (अ)

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 5

(i) सहस्त्रबाहु
(ii) महाकाव्य
(iii) 10
(iv) साठ से ऊपर
(v) जीने की इच्छा
(vi) अज्ञेय

प्रश्नोत्तर क्रमांक 6

लेखिका मन्नू भण्डारी के पिता रसोई को भटियारखाना कहते थे इसका कारण यह हैं कि वह रसोई घर को ऐसा स्थान मानते थे जहाँ पर महिलाएँ अपनी प्रतिभाओं को, अपने हुनर को तथा अपने भीतर मौजीद ~~कलाकार~~ कलाकार को भट्टी के अन्दर झौंक देती हैं। रसोई घर महिलाओं को खाना बनाने तक सीमित कर देता है।

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 5 के अंक | कुल अंक

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 7 (अथवा)

काशी मे कई सारे परिवर्तन आ रहे थे। उस्ताद बिस्मिल्ला खान कहते हैं कि काशी में से संस्कृति और एक दूसरे के प्रति आदर सम्मान की भावना खत्म हो रही है। अब काशी में संगीत को लेकर कोई उत्सुक नहीं और लोग। अब संगीत के लिए रियाज़ (अभ्यास) भी नहीं करते। काशी में से घी में तली जाने वाली कचौड़ियाँ अभ अब गायब हो रही हैं।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 8 (अथवा)

मन्नू भंडारी

रचनाएँ : (i) महाभोज
(ii) आपका बंटी

भाषा शैली : मन्नू भंडारी जी की भाषा सरल, सहज, सुबोध एवं प्रवाहमय है। आपने अपनी भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है। आपने कई शैलियों को विषय के अनुसार अपनी रचनाओं में लाया है। आपकी शैलियाँ आत्मकथात्मक, वर्णात्मक, विचारात्मक एवं भावात्मक हैं।

BSE

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 6 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 9

(i) अतिथि – जिसके आने की तिथि न पता है हो।
(ii) सर्वज्ञ – जो सब कुछ जानता हो।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 10

मधु कांकरिया अपनी रचना 'साना साना हाथ जोड़ि' मे बताती हैं कि उन्होंने सिक्किम में यात्रा करते समय कभी श्वेत तो कभी रंगीन बौद्ध पताकाएँ देखीं। जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाती है तब शान्ति और अहिंसा के लिए श्वेत पताकाएँ एवं किसी शुभ अवसर पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 11

प्रगतिवाद की विशेषताएँ

(i) इसमें तरह-तरह के बिंबो और प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।
(ii) इसमे शोषितों के प्रति सहानुभूति स्पष्ट रूप से थीं।
(iii) नारी शोषण के प्रति मुक्ति का स्वर।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 12 (अथवा)

जयशंकर प्रसाद

(1) रचनाएँ : (i) कामायनी
(ii) आँसू

(2) भावपक्ष : जयशंकर प्रसाद जी छायावाद के प्रतिनिधि कवि रहे हैं। इनका साहित्य ओज का साहित्य माना जाता है। आपने अपनी रचनाओं में प्रकृतिक चित्रण किया है। जयशंकर प्रसाद जी प्रेम के उपासक रहे हैं। आपकी रचनाओं में करुण एवं श्रृगांर रस मुख्य रूप से पाया जाता है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 13

गोपियों ने उद्धव को कहा कि वह योग का कड़वा संदेश हमें न दें बल्कि उन लोगों को दें जिनके मन स्थिर नहीं है अर्थात् जिनके मन ~~चक्री~~ चक्र के समान घूमते रहते हैं। गोपियाँ कहती हैं कि हमारे मन तो स्थिर है और हमारे मन कृष्ण के प्रेम के अलावा और कहीं नहीं भटकते इसलिए हमें योग का संदेश न दिया जाए।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 8 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 14 (अथवा)

संगतकार के मुख्य कार्य / मदद :-

(i) संगतकार मुख्य गायक- गायिकाओं की मदद इस प्रकार करते हैं कि जब वह संगीत में खो कर, राग को भूलने लगते है तब ~~बद~~ वह उनको वापस लाने में सहायता करते हैं।

(ii) संगतकार इस बात का एहसास कराते हैं कि गायक या गायिक अकेले नहीं हैं और उनको सहारा देते हैं।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 15

अतिशयोक्ति अलंकार : यह अलंकार अर्थालंकार का प्रकार है। इस अलंकार में किसी बात को बढ़ा चढ़ा कर बताया जाता है, इसमें समाज की सीमाओं को तोड़ दिया जाता है।

उदाहरण : हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
सारी लंका जल गई, गए निसाचर भाग॥

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्त क्रमांक 16

हास्य रस : जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से स्थायी भाव हास की प्राप्ति होती है वहाँ हास्य रस होता है।

उदाहरण : पन्नू पंसारी के पाँच हज़ार पाँच सौ पचपन रुपय पानी में परे-परे परपरा गए।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 17

	कहानी	उपन्यास
(i)	कहानी का क्षेत्र सीमित होता है।	उपन्यास का क्षेत्र व्यापक होता है।
(ii)	कहानी में एक घटना का वर्णन होता है।	उपन्यास में अनेक घटनाओं का वर्णन होता है।
(iii)	इसमें पात्रों की संख्या कम होती है।	इसमें पात्रों की संख्या अधिक होती है।
(iv)	उदाहरण : नेता जी का चश्मा।	उदाहरण : गबन, गोदान।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 18

बार-बार सोचते, क्या होगा - - - - है।

संदर्भ => उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तिका 'क्षितिज' के अध्याय 'नेता जी का चश्मा' से लिया गया है। इसके लेखक स्वयं प्रकाश जी हैं।

प्रसंग => इस गद्यांश में स्वयं प्रकाश जी ने लोगों के भीतर सच्ची देशभक्ति का भाव न होने पर अपने विचार व्यक्त किये हैं।

व्याख्या => लेखक स्वयं प्रकाश जी कह रहे हैं कि न जाने आज इस कौम का क्या होगा, क्योंकि यह कौम उन लोगों पर हँसती है, जिन्होंने इनकी आज़ादी के खातिर अपना समस्त जीवन न्योछावर कर दिया। देश की आज़ादी के लिए इन महान हस्तियों ने अपनी जवानी, जिंदगी, आदि देश के लिए छोड़ दी। मगर ये लोग (कौम) बिकने के मौके ढूँढ़ते हैं।

विशेष => (i) भाषा सरल सुबोध एवं साधारण है। विदेशज शब्दों का प्रयोग। (ii) देश के प्रति प्रेम भावना है। [लेखक में]

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 19 [अनुच्छेद]

"स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत"

हम भारत के वासी हैं। हमारा कर्तव्य है कि सदैव हम अपनी मात्रभूमि को सम्मान दें, इसे साफ रखें। स्वच्छता का प्रत्येक नागरिक के जीवन में महत्व है। हम जितना ~~स्वस्थ~~ स्वच्छ रहेंगे उतना ही स्वस्थ रहेंगे।

यदि हम हमारे आव-पास सफाई रखेंगे तो हम बीमारियों से दूर ~~रह~~ रहेंगे, हम स्वस्थ रहेंगे तो हमारा तन और मन दोनो स्थिर हो जाएगा। हम अपने ~~देश~~ देश के लिए संसाधन बन जाएँगे। हमारे देश की प्रगति हम नागरिकों पर ही निर्भर करती है।

"स्वच्छता को अपनाओ,
बीमारियों को दूर भगाओ।"

स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत का सपना सच करने का मयार (काबू) हममेंसर है। एकजुट होकर हमें संकल्प करना होगा कि अपने देश को पूरी दुनियाँ में सबसे स्वच्छ और स्वस्थ बनाएँगे। कूड़ा-कचरा हमेशा जगह पर फेकेंगे।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक २०

नाथ संभुधनु भंजनिहारा - - - मोरा।

संदर्भ => उपर्युक्त काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तिका 'क्षितिज' के अध्याय 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' से लिया गया है। इसके रचनाकार तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग => शिव धनुष के टूट जाने पर ~~लक्ष्मण~~ राम तथा परशुराम के बीच संवाद को बताया गया है।

भावार्थ => राम परशुराम से कहते हैं कि, हे नाथ! शिव धनुष का भंजन करने वाला आपका कोई दास ही होगा। क्या आज्ञा है आप मुझसे क्यों नहीं कहते। यह सुनकर परशुराम क्रोधित होकर बोले कि सेवक तो वह होता जो सेवा करता है, शत्रु का कार्य करने वाले से तो लड़ाई ही की जाती है। सुनो राम जिसने भी धनुष तोड़ा है वह मेरा सहस्त्रबाहु के की समान शत्रु है।

विशेष : (i) रस : रौद्र (ii) छंद : चौपाई
(iii) पंक्तियों में परशुराम अपना क्रोध प्रकट कर रहे हैं।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल अंक

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक २

767 सी. वी नगर
लखनऊ [उ.प्र]
दिनांक : 27/02/25

प्रिय मित्र अमिता,

मैं यहाँ अच्छा हूँ, आशा है कि वहाँ पर भी सब मगलमय ही होगा। मुझे शीला द्वारा यह बात पता चली कि तुमने वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान अर्जित किया है। मेरे माता-पिता को और मुझे तुम पर गर्व है। हमारी ओर से तुम्हें ढेर सारी बधाइयाँ। हम तुम्हारी सफलता के लीए भगवान से प्रार्थना करेंगे।

माता-पिता को प्रणाम तथा छोटू को प्यार।

तुम्हारी मित्र
अ ब स

B
S
E

प्रश्न क्र.

B S E

प्रश्नोत्तर क्रमांक 22

जीवन में खेलों का महत्व

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- खेलों का महत्व
- खेलों के प्रकार
- स्वास्थ्य तथा खेल
- उपसंहार

1. प्रस्तावना : खेल-कूद ऐसी प्रतिक्रियाएं होती हैं जिनको करने से हमारे अन्दर का बच्चा जाग जाता है। इनसे हमारा हुनर खिलकर निकलता है। खेलों का महत्व हमारे जीवन में अतुलनीय है। खेलों को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता। खेल भी एक प्रकार की शिक्षा है जो मानव को जीवन की सफलताओं से मिलवाने का प्रयास करती है। इनका महत्व केवल ~~सारिरिक~~ शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक भी है।

प्रश्न क्र.

☆ खेलों का महत्व : खेलों को खेलने से हमारे अन्दर एक अद्भुत शक्ति का संचार होने लगता है। खेल हमें जीवन जीने का सही ढंग सिखाते हैं, वह हमें अनुशासित बनाते हैं। खेलों ही से ~~हम~~ हम सहानुभूति का भाव जाग्रित करते हैं। हम जीवन में हार-जीत के सत्य को जान पाते हैं।

"भारत के प्रिय बच्चों
खेलों को अपनाना
सफलता की चोटी पर तुम फिर चढ़ते ही जाना।"

☆ खेलों के प्रकार : खेलों के कई प्रकार होते हैं, कुछ खेल घर के ~~आ~~ अन्दर तो कुछ खेल घर के बाहर खेले जाते हैं।

घर के अन्दर खेले जाने वाले खेल : शतरंज, चैस, लूडो, कैरम, आदि।

घर के बाहर खेले जाने वाले खेल : क्रिकेट, बास्केटबाल, हॉकी, बैटमिनटन, आदि।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

☆ सेहत तथा खेल : खेल हमें मानसिक तथा शारीरिक बीमारियों से लड़ने की ताकत देता है। खेल का हमारी सेहत पर असर पड़ता है। खेल खेलने से हमारी शक्तियाँ अधिक से अधिक होती चली जाती हैं। जो व्यक्ति अनुशासित ढंग से खेलों को जीवन में उतारता है वह सदैव ही सेहतमंद रहता है।

"खेल-खेलकर ही तो मानव बना महान।
बूढ़ों में भी डाल दी हैं खेलों ने जान।।"

☆ उपसंहार : हमें ज़रूर ही खेलों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। वास्तव में समस्त लोगों को खेलों का महत्व पता होता है परन्तु सफल तो वही बन पाता है जो सिर्फ सुनता ही नहीं पर उसको जीवन में लाता है।

'खेलों की हार-जीत में जो मज़ा है वह और कहीं नहीं।'
क्योंकि ......

"समझदार व्यक्ति या तो जीत जाता है
या सीख जाता है।"

17

योग पूर्व पृष्ठ

कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक 23

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'एकाग्रता का महत्व' होना चाहिए।

(ii) उत्कृष्ट पद की प्राप्ति के लिए एकाग्र मन से पढ़ना चाहिए।

(iii) एकाग्रता का मानव जीवन पर गहरा असर पड़ता है। समस्त मोहमायाओं को त्याग कर जीवन में एकाग्र मन से सफलता के लिए मेहनत करने वाले को ही जीत गले लगाती है।